satvikly

PURE · SATVIK · PUJA ESSENTIALS

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥

श्री सत्यनारायण भगवान की संपूर्ण व्रत कथा

SATYANARAYAN VRAT KATHA · FIVE CHAPTERS

श्री सत्यनारायण भगवान की जय।

विषय-सूची

CONTENTS

प्रथम अध्याय	व्रत की उत्पत्ति, महिमा और पूजन-विधान
द्वितीय अध्याय	काशी के निर्धन ब्राह्मण और लकड़हारे की कथा
तृतीय अध्याय	राजा उल्कामुख, साधु वैश्य, लीलावती और कलावती की कथा
चतुर्थ अध्याय	साधु वैश्य की परीक्षा और प्रसाद की महिमा
पञ्चम अध्याय	राजा तुङ्गध्वज की कथा और व्रत का फल

CHAPTER ONE

प्रथम अध्याय

व्रत की उत्पत्ति, महिमा और पूजन-विधान

बहुत समय पहले नैमिषारण्य नामक पवित्र तीर्थ में शौनक आदि अट्ठासी हजार ऋषि एकत्र हुए। वे धर्म, भक्ति और लोक-कल्याण पर विचार कर रहे थे। उन्होंने पुराणों के ज्ञाता श्री सूतजी से विनम्र होकर पूछा, "हे मुनिश्रेष्ठ! कलियुग में मनुष्य अनेक प्रकार के दुःखों से घिरा रहता है। बहुत से लोग वेद और शास्त्रों का गहरा ज्ञान भी नहीं रखते। ऐसा कौन-सा सरल व्रत या उपाय है, जिससे थोड़े समय और साधनों में पुण्य मिले, मन की उचित कामनाएँ पूरी हों और जीवन का कल्याण हो?"

ऋषियों का प्रश्न सुनकर सूतजी बोले, "हे मुनियों! आपने समस्त प्राणियों के हित की बात पूछी है। मैं आपको एक ऐसे परम कल्याणकारी व्रत का वर्णन सुनाता हूँ, जिसके विषय में देवर्षि नारद ने स्वयं भगवान श्रीहरि से पूछा था। आप सब श्रद्धा से सुनें।"

एक समय देवर्षि नारद लोक-कल्याण की इच्छा से पृथ्वी पर घूम रहे थे। उन्होंने देखा कि अनेक मनुष्य अपने कर्मों के कारण रोग, शोक, निर्धनता, भय, बन्धन और पारिवारिक कष्ट झेल रहे हैं। किसी को भोजन नहीं मिलता था, कोई संतान के दुःख से व्याकुल था, कोई धन होते हुए भी मानसिक अशान्ति में था। अनेक लोग उचित मार्ग न जानने के कारण दुःख से निकल नहीं पा रहे थे। यह देखकर नारदजी का हृदय करुणा से भर गया। वे सोचने लगे, "ऐसा कौन-सा उपाय हो, जिसे सामान्य मनुष्य भी श्रद्धा से कर सके और उसके दुःख कम हों?"

यह विचार कर देवर्षि नारद भगवान विष्णु के धाम वैकुण्ठ पहुँचे। वहाँ उन्होंने शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए हुए, पीताम्बर पहने, वनमाला से सुशोभित भगवान श्रीहरि के दर्शन किए। नारदजी ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और स्तुति करते हुए बोले, "हे अनन्त स्वरूप! हे दीनबन्धु! हे भक्तों के दुःख हरने वाले प्रभु! आपको बार-बार प्रणाम है।"

भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर पूछा, "हे नारद! आपके मन में कौन-सी बात है? आप किस उद्देश्य से यहाँ आए हैं? निःसंकोच होकर कहिए।"

नारदजी बोले, “हे प्रभु! पृथ्वी पर मनुष्य अनेक योनियों में जन्म लेकर अपने कर्मों का फल भोगते हैं। वे रोग, शोक, गरीबी, भय और अन्य कष्टों से पीड़ित हैं। कृपा करके ऐसा सरल उपाय बताइए, जिससे वे थोड़े प्रयास में दुःखों से मुक्त होकर सुख और सद्गति प्राप्त कर सकें।”

भगवान श्रीहरि बोले, “हे नारद! आपने प्राणियों के हित के लिए बहुत उत्तम प्रश्न किया है। मैं प्रेमपूर्वक एक दुर्लभ और पुण्यदायक व्रत बताता हूँ। यह व्रत स्वर्ग और मृत्युलोक दोनों में कल्याण देने वाला है। श्रद्धा और भक्ति से श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत करने वाला मनुष्य इस लोक में सुख भोगता है और अन्त में उत्तम गति प्राप्त करता है।”

भगवान के वचन सुनकर नारदजी ने फिर पूछा, “हे प्रभु! इस व्रत का फल क्या है? इसे किस प्रकार किया जाए? इसे किसने किया और किन अवसरों पर किया जा सकता है? कृपा करके सब विस्तार से बताइए।”

भगवान विष्णु बोले, “यह व्रत दुःख और शोक को दूर करने वाला, धन-धान्य बढ़ाने वाला, सौभाग्य देने वाला तथा उचित मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। मनुष्य इसे पूर्णिमा, संक्रान्ति, किसी शुभ कार्य, संतान की कामना, विवाह, गृह-प्रवेश, यात्रा से लौटने, संकट से मुक्ति या अपनी श्रद्धा के अनुसार किसी भी उचित दिन कर सकता है। व्रत का मूल आधार सत्य, श्रद्धा, स्वच्छता, संकल्प और प्रसाद के प्रति सम्मान है।”

“व्रती प्रातः स्नान करके मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहने का संकल्प करे। दिन भर अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपवास या सात्त्विक नियम रखे। सन्ध्या के समय परिवार, बन्धु-बान्धव और ब्राह्मणों के साथ भगवान श्री सत्यनारायण की पूजा करे। केले, घी, शहद, शक्कर अथवा गुड़, दूध और गेहूँ के आटे से बना नैवेद्य श्रद्धापूर्वक अर्पित करे। सामग्री को सवाया मात्रा में रखने की परम्परा है। गेहूँ उपलब्ध न हो तो स्थानीय परम्परा के अनुसार शुद्ध अन्न का चूर्ण लिया जा सकता है।”

“पूजा के बाद पाँचों अध्याय ध्यानपूर्वक सुने या पढ़े। कथा पूरी होने पर आरती करे, भगवान को प्रणाम करे और प्रसाद सबमें बाँटे। ब्राह्मणों, अतिथियों, निर्धनों और अपने परिवार को भोजन कराए। उसके बाद स्वयं प्रसाद और भोजन ग्रहण करे। रात्रि में भगवान का नाम, भजन और स्मरण करे। कथा सुनते समय मन को दूसरी बातों में न लगाएँ। संकल्प करने के बाद उसे भूलना नहीं चाहिए और भगवान के प्रसाद का कभी अपमान नहीं करना चाहिए।”

“जो मनुष्य विधिपूर्वक, निष्कपट भाव और सत्य आचरण के साथ यह व्रत करता है, उसकी उचित कामनाएँ पूर्ण होती हैं। कलियुग में यह कम साधनों से किया जाने वाला सरल और पुण्यदायक व्रत है। व्रत का फल केवल बाहरी सामग्री से नहीं, बल्कि सत्य, श्रद्धा, दया, दान और प्रसाद के सम्मान से मिलता है।”

सूतजी बोले, “हे ऋषियों! भगवान श्रीहरि ने देवर्षि नारद को इस प्रकार श्री सत्यनारायण व्रत की महिमा और विधि बताई। अब आगे सुनिए कि पृथ्वी पर सबसे पहले किन लोगों ने यह व्रत किया और उन्हें क्या फल मिला।”

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण-व्रतकथायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥

बोलिए श्री सत्यनारायण भगवान की जय।

satvikly

CHAPTER TWO

द्वितीय अध्याय

काशी के निर्धन ब्राह्मण और लकड़हारे की कथा

सूतजी बोले, “हे श्रेष्ठ मुनियों! अब मैं बताता हूँ कि प्राचीन समय में पृथ्वी पर किसने सबसे पहले श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत किया। आप एकाग्र होकर सुनें।”

काशी नगरी में एक अत्यन्त निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह धर्मपरायण था, पर उसके पास जीविका का कोई स्थायी साधन नहीं था। भोजन पाने के लिए वह प्रतिदिन भिक्षा माँगता और नगर की गलियों में भटकता था। कई बार दिन भर घूमने पर भी उसे पर्याप्त अन्न नहीं मिलता था। भूख, दुर्बलता और निर्धनता से उसका शरीर क्षीण हो गया था, फिर भी वह भगवान का स्मरण करता रहता था।

भक्तवत्सल भगवान श्री सत्यनारायण ने उस ब्राह्मण की दशा देखी। उसकी सहायता करने के लिए वे एक वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण कर उसके पास पहुँचे। उन्होंने स्नेह से पूछा, “हे विप्र! तुम इतने दुःखी और चिन्तित होकर प्रतिदिन कहाँ घूमते हो? तुम्हारी जीविका कैसे चलती है?”

निर्धन ब्राह्मण बोला, “हे महात्मन्! मैं बहुत गरीब हूँ। भिक्षा माँगकर अपना जीवन चलाता हूँ। कई दिन पूरा भोजन भी नहीं मिलता। आप कोई ऐसा धर्ममय उपाय जानते हों, जिससे मेरा दुःख दूर हो सके, तो कृपा करके बताइए।”

वृद्ध ब्राह्मण रूपधारी भगवान बोले, “श्री सत्यनारायण भगवान मनुष्य की उचित मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। तुम श्रद्धा से उनका व्रत और पूजन करो। परिवार और सज्जनों के साथ उनकी कथा सुनो, प्रसाद बाँटो और सामर्थ्य के अनुसार दान तथा भोजन कराओ। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारा दुःख दूर होगा।”

ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर कहा, “हे महात्मन्! कृपा करके इस व्रत की पूरी विधि भी बताइए।” वृद्ध ब्राह्मण ने उसे व्रत का विधान समझाया और वहीं अन्तर्धान हो गए। ब्राह्मण ने चारों ओर देखा, पर वह दिव्य वृद्ध कहीं दिखाई नहीं दिए। तब उसे विश्वास हुआ कि भगवान स्वयं उसका मार्ग बताने आए थे।

उस रात निर्धन ब्राह्मण को ठीक से नींद नहीं आई। वह बार-बार श्री सत्यनारायण भगवान के व्रत के विषय में सोचता रहा। प्रातः उठकर उसने दृढ़ संकल्प किया, “आज भिक्षा से जो कुछ प्राप्त होगा, उसी से मैं भगवान श्री सत्यनारायण का पूजन करूँगा।” नित्यकर्म और भगवान का स्मरण करके वह भिक्षा के लिए निकला।

उस दिन भगवान की कृपा से उसे अन्य दिनों की अपेक्षा बहुत अधिक अन्न, धन और पूजन की सामग्री मिली। वह प्रसन्न होकर घर लौटा। उसने केले, दूध, घी, गुड़ या शक्कर, गेहूँ का आटा और अन्य आवश्यक सामग्री जुटाई। बन्धु-बान्धवों और पड़ोसियों को बुलाया। विधिपूर्वक श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा की, पाँचों अध्यायों की कथा सुनी और प्रसाद सबमें बाँटा।

व्रत के प्रभाव से उसकी आजीविका सुधरने लगी। धीरे-धीरे उसके घर में अन्न, वस्त्र और आवश्यक धन की कमी दूर हो गई। ब्राह्मण ने समृद्धि मिलने पर भगवान को नहीं भुलाया। वह प्रत्येक मास की पूर्णिमा या अपनी सामर्थ्य के अनुसार नियमित रूप से सत्यनारायण व्रत करता रहा। सत्य बोलता, अतिथि का सम्मान करता, जरूरतमन्दों की सहायता करता और प्रसाद श्रद्धा से ग्रहण करता था। इस प्रकार वह गरीबी और अनेक दुःखों से मुक्त हुआ। जीवन के अन्त में उसे उत्तम गति प्राप्त हुई।

सूतजी बोले, “हे मुनियों! जो मनुष्य उस ब्राह्मण के समान श्रद्धा और सत्य भाव से यह व्रत करता है, वह अपने पाप और दुःखों से मुक्त होकर भगवान की कृपा प्राप्त करता है।”

ऋषियों ने पूछा, “हे सूतजी! उस ब्राह्मण के बाद और किसने यह व्रत किया? हम उसकी कथा भी सुनना चाहते हैं।”

सूतजी बोले, “एक दिन वह ब्राह्मण अपने परिवार और बन्धु-बान्धवों के साथ श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत कर रहा था। उसी समय एक बूढ़ा लकड़हारा लकड़ियों का गट्ठर लेकर वहाँ पहुँचा। वह प्यास और थकान से व्याकुल था। उसने लकड़ियाँ बाहर रखीं और जल पाने की इच्छा से ब्राह्मण के घर में गया।”

घर के भीतर उसने पूजा, कथा और प्रसाद का आयोजन देखा। उसने ब्राह्मण को प्रणाम करके पूछा, “हे विप्रदेव! आप किस देवता का पूजन कर रहे हैं? इस व्रत का क्या नाम है और इसे करने से क्या फल मिलता है? कृपा करके मुझे भी बताइए।”

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, “यह मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाला श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत है। इन्हीं की कृपा से मेरी गरीबी दूर हुई और घर में अन्न-धन आया। इसका पूजन सत्य, श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार किया जाता है।”

लकड़हारे ने कथा ध्यान से सुनी, चरणामृत और प्रसाद ग्रहण किया तथा मन में संकल्प किया, “कल लकड़ी बेचने से जो धन मिलेगा, उसी से मैं भी श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत करूँगा।” वह भगवान को प्रणाम कर घर लौट गया।

अगले दिन वह प्रातः लकड़ियों का गट्ठर सिर पर रखकर उस नगर की ओर चला, जहाँ धनवान लोग रहते थे। भगवान की कृपा से उस दिन उसकी लकड़ियाँ सामान्य मूल्य से चार गुने दाम पर बिकीं। वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ। प्राप्त धन से उसने पके केले, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर या गुड़, गेहूँ का आटा और अन्य पूजन-सामग्री खरीदी। फिर अपने घर पहुँचकर परिवार और बन्धु-बान्धवों को बुलाया।

लकड़हारे ने विधि-विधान से भगवान श्री सत्यनारायण का पूजन किया। कथा सुनी, प्रसाद चढ़ाया और सभी लोगों में आदरपूर्वक बाँटा। उसने अपनी सामर्थ्य के अनुसार भोजन और दान भी किया। इस व्रत के प्रभाव से उसके घर की गरीबी दूर हुई। उसे धन, अन्न, परिवार का सुख और सम्मान मिला। वह ईमानदारी से श्रम करता और भगवान को स्मरण करता रहा। संसार के सुख भोगकर अन्त में वह वैकुण्ठ धाम को प्राप्त हुआ।

सूतजी बोले, “इस प्रकार काशी के निर्धन ब्राह्मण और बूढ़े लकड़हारे ने श्रद्धा से व्रत किया और भगवान की कृपा पाई। अब तीसरे अध्याय में राजा उल्कामुख, साधु वैश्य, लीलावती और कलावती की कथा सुनिए।”

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण-व्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

बोलिए श्री सत्यनारायण भगवान की जय।

CHAPTER THREE

तृतीय अध्याय

राजा उल्कामुख, साधु वैश्य, लीलावती और कलावती की कथा

सूतजी बोले, “हे श्रेष्ठ मुनियों! अब मैं इस व्रत से जुड़ी एक और प्राचीन कथा सुनाता हूँ। इसे श्रद्धा और एकाग्रता से सुनें।”

प्राचीन काल में उल्कामुख नामक एक धर्मपरायण राजा था। वह सत्य बोलता, इन्द्रियों को वश में रखता और प्रजा का न्यायपूर्वक पालन करता था। वह प्रतिदिन देवालय जाता, भगवान का पूजन करता और निर्धनों को अन्न तथा धन देकर उनके कष्ट कम करता था। उसकी पत्नी कमल के समान सुन्दर मुख वाली, पतिव्रता और साध्वी थी।

एक दिन राजा उल्कामुख अपनी पत्नी के साथ भद्रशीला नदी के तट पर श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत कर रहा था। वहाँ वेदी सजाई गई थी। भगवान की प्रतिमा के सामने दीप, फल, पुष्प और नैवेद्य रखे थे। राजा और रानी श्रद्धा से पूजा और कथा सुन रहे थे।

उसी समय साधु नाम का एक धनी वैश्य व्यापार के लिए अपनी नाव से वहाँ आया। उसके पास बहुत-सा व्यापारिक माल और धन था। उसने नाव को नदी के किनारे रुकवाया और राजा के पास पहुँचा। राजा को व्रत करते देखकर उसने विनम्रता से पूछा, “हे राजन्! आप किस देवता की पूजा कर रहे हैं? यह कौन-सा व्रत है और इसे करने से क्या फल मिलता है? कृपा करके मुझे भी बताइए।”

राजा उल्कामुख बोले, “हे साधु वैश्य! यह श्री सत्यनारायण भगवान का परम कल्याणकारी व्रत है। मैं अपनी पत्नी और बन्धु-बान्धवों के साथ संतान की प्राप्ति के लिए इसका पूजन कर रहा हूँ। श्रद्धा से इस व्रत को करने पर भगवान उचित मनोरथ पूर्ण करते हैं।”

साधु वैश्य ने आदरपूर्वक कहा, “हे राजन्! मेरी भी कोई संतान नहीं है। कृपा करके मुझे इसका पूरा विधान बताइए। मैं भी यह व्रत करूँगा।” राजा ने उसे पूजा, कथा, प्रसाद और दान सहित व्रत की विधि समझाई। साधु वैश्य ने सब सुनकर प्रणाम किया और अपने घर लौट आया।

घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी लीलावती को व्रत की महिमा सुनाई। उसने कहा, “यदि भगवान की कृपा से हमारे घर संतान हुई, तो हम श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत करेंगे।” लीलावती ने भी प्रसन्न होकर उस संकल्प को स्वीकार किया और मन ही मन भगवान से प्रार्थना की।

कुछ समय बाद भगवान की कृपा से लीलावती गर्भवती हुई। दसवें महीने उसने एक अत्यन्त सुन्दर कन्या को जन्म दिया। माता-पिता ने उसका नाम कलावती रखा। कन्या चन्द्रमा की कलाओं के समान प्रतिदिन बढ़ने लगी। घर में प्रसन्नता छा गई, पर साधु वैश्य अपने किए हुए संकल्प को पूरा करना भूल गया।

एक दिन लीलावती ने पति से कहा, “स्वामी! आपने संतान होने पर श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत करने का संकल्प किया था। अब हमें वह व्रत करना चाहिए।” साधु वैश्य ने उत्तर दिया, “प्रिय! कलावती के विवाह के समय हम यह व्रत बड़े आयोजन के साथ करेंगे।” यह कहकर उसने व्रत को फिर आगे के लिए टाल दिया।

समय बीता और कलावती विवाह योग्य हो गई। साधु वैश्य ने योग्य वर की खोज के लिए दूत भेजे। एक सुशील, विद्वान और व्यापार में कुशल वैश्य-पुत्र उसे योग्य लगा। उसने परिवार और बन्धु-बान्धवों की उपस्थिति में कलावती का विवाह उस युवक के साथ कर दिया। विवाह का उत्सव सम्पन्न हो गया, पर साधु वैश्य ने उस समय भी श्री सत्यनारायण व्रत का संकल्प पूरा नहीं किया।

संकल्प को बार-बार भूलने से भगवान अप्रसन्न हुए। कुछ समय बाद साधु वैश्य अपने दामाद को साथ लेकर व्यापार के लिए समुद्र तट के पास स्थित रत्नसारपुर नामक नगर पहुँचा। उस नगर पर राजा चन्द्रकेतु का शासन था। ससुर और दामाद वहाँ व्यापार करने लगे और उनका कारोबार अच्छा चलने लगा।

एक रात एक चोर राजा के महल से बहुमूल्य धन चुराकर भागा। राजा के सैनिक उसके पीछे लगे थे। पकड़े जाने के भय से चोर ने चुराया हुआ धन उस स्थान पर रख दिया, जहाँ साधु वैश्य और उसका दामाद ठहरे हुए थे। वह स्वयं अँधेरे में भाग निकला। सैनिक वहाँ पहुँचे और राजा का धन दोनों वैश्यों के पास पड़ा देखा। बिना पूरी जाँच किए उन्होंने साधु वैश्य और उसके दामाद को चोर समझ लिया।

सैनिक दोनों को बाँधकर राजा चन्द्रकेतु के सामने ले गए और बोले, “महाराज! हमने इन दोनों चोरों को आपके धन सहित पकड़ लिया है।” राजा ने भी तत्काल सत्य की जाँच नहीं कराई। उसकी आज्ञा से साधु वैश्य और उसके दामाद को कठोर कारागार में डाल दिया गया। उनका व्यापारिक माल, धन और नाव भी राजकोष में जमा कर ली गई।

उधर साधु वैश्य के घर पर भी विपत्ति आ गई। उसका संचित धन चोर ले गए। घर में अन्न और वस्त्र की कमी हो गई। लीलावती और कलावती शारीरिक तथा मानसिक कष्ट झेलने लगीं। पति और दामाद का कोई समाचार न मिलने से दोनों अत्यन्त चिन्तित थीं। कई दिन उन्हें पर्याप्त भोजन भी नहीं मिला।

एक दिन भूख से व्याकुल कलावती अन्न की खोज में एक ब्राह्मण के घर गई। वहाँ श्री सत्यनारायण भगवान का पूजन हो रहा था। वह विनम्रता से बैठ गई, पूरी कथा सुनी और प्रसाद ग्रहण किया। कथा समाप्त होने के बाद वह रात में घर लौटी।

लीलावती ने पूछा, “पुत्री! तुम इतनी देर तक कहाँ थीं?” कलावती बोली, “माता! मैं एक ब्राह्मण के घर गई थी। वहाँ श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत और कथा हो रही थी। मैंने कथा सुनी और प्रसाद ग्रहण किया। यह वही व्रत है, जिसका संकल्प पिताजी ने किया था।”

पुत्री के वचन सुनते ही लीलावती को भूला हुआ संकल्प याद आ गया। उसने अगले ही दिन पूजा की तैयारी की। अपने बन्धु-बान्धवों और पड़ोसियों को बुलाकर श्रद्धा से श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत किया। कथा सुनकर उसने प्रार्थना की, “हे प्रभु! मेरे पति और दामाद शीघ्र सकुशल लौट आएँ। हमारे परिवार से संकल्प पूरा करने में जो अपराध हुआ है, उसे क्षमा करें।”

भगवान श्री सत्यनारायण उनकी प्रार्थना से प्रसन्न हुए। उसी रात वे राजा चन्द्रकेतु के स्वप्न में प्रकट हुए और बोले, “हे राजन्! जिन दोनों वैश्यों को तुमने बन्दी बनाया है, वे निर्दोष हैं। प्रातः उन्हें कारागार से मुक्त करो और उनका धन लौटा दो। यदि तुमने मेरी आज्ञा नहीं मानी, तो तुम्हारा धन, राज्य और परिवार संकट में पड़ जाएगा।” इतना कहकर भगवान अन्तर्धान हो गए।

प्रातः राजा चन्द्रकेतु ने अपने सभासदों को स्वप्न सुनाया। उसने तुरन्त साधु वैश्य और उसके दामाद को बुलाने की आज्ञा दी। दोनों कारागार से बाहर लाए गए। उन्होंने राजा को प्रणाम किया। राजा ने कहा, “तुम दोनों को बिना अपराध जाँच के बहुत कष्ट सहना पड़ा। यह हमारे निर्णय की भूल थी। अब तुम्हें भय नहीं है।”

राजा ने दोनों को स्नान, वस्त्र और आभूषण दिए। जितना धन और माल उनसे लिया गया था, उसका दुगुना देकर सम्मानपूर्वक विदा किया। साधु वैश्य और उसका दामाद भगवान की कृपा से प्रसन्न हुए। उन्होंने यात्रा से पहले दान दिया, मंगलाचार किया और नाव में बैठकर अपने नगर की ओर चल पड़े। आगे की घटना चौथे अध्याय में कही गई है।”

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण-व्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

बोलिए श्री सत्यनारायण भगवान की जय।

satvikly

CHAPTER FOUR

चतुर्थ अध्याय

साधु वैश्य की परीक्षा और प्रसाद की महिमा

सूतजी बोले, “हे मुनियों! राजा चन्द्रकेतु से सम्मान और धन पाकर साधु वैश्य अपने दामाद के साथ घर की ओर चल पड़ा। नाव बहुमूल्य वस्तुओं और व्यापारिक धन से भरी थी। दोनों ने सोचा कि अब सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो गई हैं। परन्तु साधु वैश्य ने अभी तक अपने पुराने संकल्प की भूल को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया था।”

कुछ दूर जाने पर भगवान श्री सत्यनारायण ने उसकी परीक्षा लेने का विचार किया। वे दण्ड धारण किए हुए एक संन्यासी के रूप में मार्ग के पास प्रकट हुए। दण्डी वेषधारी भगवान ने साधु वैश्य से पूछा, “हे वणिक! तुम्हारी नाव में क्या भरा है? तुम कहाँ से आ रहे हो और कहाँ जा रहे हो?”

धन के अभिमान में साधु वैश्य ने उस संन्यासी का सम्मान नहीं किया। वह हँसते हुए बोला, “हे दण्डी! आप मेरी नाव के विषय में क्यों पूछ रहे हैं? क्या आपको मेरे धन में से कुछ चाहिए? नाव में कोई बहुमूल्य वस्तु नहीं है। इसमें तो केवल लता-पत्र भरे हैं।”

उसका असत्य और उपहासपूर्ण उत्तर सुनकर दण्डी रूपधारी भगवान बोले, “हे वैश्य! तुम्हारा वचन सत्य हो।” इतना कहकर वे कुछ दूर चले गए और समुद्र के किनारे बैठ गए।

साधु वैश्य नित्यकर्म करके नाव पर लौटा। उसने देखा कि सारा धन, रत्न और व्यापारिक सामान सचमुच लता-पत्र बन चुका है। नाव में कोई मूल्यवान वस्तु शेष नहीं थी। यह देखकर वह स्तब्ध रह गया और भूमि पर मूर्छित होकर गिर पड़ा। होश आने पर वह विलाप करने लगा, “हमारा सारा धन कहाँ चला गया? परिवार का पालन कैसे होगा? यह विपत्ति किस कारण आई?”

उसका दामाद धैर्यवान था। उसने कहा, “पिताजी! यह सामान्य घटना नहीं है। अवश्य ही उस दण्डी संन्यासी की महिमा से ऐसा हुआ है। आपने उनसे असत्य और कठोर वचन कहे थे। हमें उनके पास जाकर क्षमा माँगनी चाहिए। उनकी शरण लेने से ही हमारा संकट दूर होगा।”

दामाद की बात सुनकर साधु वैश्य दण्डी के पास पहुँचा। उसने भूमि पर दण्डवत प्रणाम किया और रोते हुए बोला, “हे प्रभु! अज्ञान और धन के अभिमान से मैंने असत्य कहा। आपके प्रश्न का उपहास किया और आपको पहचान नहीं पाया। मेरे अपराध को क्षमा करें। मैं स्वीकार करता हूँ कि संकल्प करके भी आपकी पूजा को बार-बार टालता रहा। अब मैं श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार आपका व्रत करूँगा। कृपा करके मेरी रक्षा करें।”

दण्डी रूपधारी भगवान बोले, “हे वैश्य! तुमने मेरी पूजा का संकल्प किया, पर उसे भुला दिया। बार-बार चेतावनी मिलने पर भी तुम पूजा से विमुख रहे। इसी कारण तुम्हें कष्ट प्राप्त हुआ। सत्य का व्रत करने वाले को असत्य और अभिमान से दूर रहना चाहिए।”

साधु वैश्य ने फिर हाथ जोड़कर कहा, “हे भगवान! आपकी माया को ब्रह्मा आदि देवता भी पूरी तरह नहीं जान सकते। मैं अज्ञानी मनुष्य आपको कैसे पहचानता? अब मुझ पर प्रसन्न हों। मैं आगे कभी संकल्प और प्रसाद का अनादर नहीं करूँगा।”

उसकी विनम्र प्रार्थना सुनकर भगवान प्रसन्न हुए। उन्होंने वर दिया और अन्तर्धान हो गए। साधु वैश्य और उसका दामाद शीघ्र नाव पर लौटे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि नाव फिर से धन, रत्न और व्यापारिक वस्तुओं से भर गई है। दोनों ने भगवान श्री सत्यनारायण को प्रणाम किया। उन्होंने अपने साथियों के साथ पूजा की, प्रसाद ग्रहण किया और यात्रा आरम्भ की।

जब वे अपने नगर के निकट पहुँचे, तो साधु वैश्य ने एक दूत को घर भेजा। दूत ने लीलावती के पास जाकर प्रणाम किया और कहा, “मालकिन! आपके पति और दामाद धन तथा व्यापारिक सामान के साथ नगर के पास पहुँच गए हैं। वे शीघ्र घर आने वाले हैं।”

यह शुभ समाचार सुनकर लीलावती अत्यन्त प्रसन्न हुई। वह उस समय अपनी पुत्री कलावती और परिवार के साथ श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत कर रही थी। उसने पूजा और कथा पूरी की। फिर कलावती से कहा, “पुत्री! मैं तुम्हारे पिता के दर्शन के लिए जाती हूँ। तुम भगवान का प्रसाद ग्रहण करके पूजा का शेष कार्य पूरा करना, फिर अपने पति से मिलने आना।”

कलावती अपने पति से मिलने के उत्साह में प्रसाद ग्रहण करना भूल गई। वह पूजा-स्थान पर प्रसाद छोड़कर शीघ्र नदी तट की ओर दौड़ी। भगवान श्री सत्यनारायण प्रसाद की उपेक्षा से अप्रसन्न हुए। उनकी माया से कलावती का पति और उसकी नाव जल में अदृश्य हो गए।

नदी तट पर पहुँचकर कलावती को पति दिखाई नहीं दिया। नाव भी वहाँ नहीं थी। वह व्याकुल होकर रोने लगी और भूमि पर गिर पड़ी। लीलावती तथा साधु वैश्य ने उसे रोते देखा। नाव और दामाद के अदृश्य होने से साधु वैश्य भी अत्यन्त दुःखी हुआ। उसने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "हे सत्यनारायण भगवान! हमारे परिवार से फिर भूल हुई है। कृपा करके अपराध क्षमा करें और मेरे दामाद की रक्षा करें।"

तभी आकाशवाणी हुई, "हे वैश्य! तुम्हारी पुत्री भगवान का प्रसाद ग्रहण किए बिना अपने पति से मिलने चली आई है। इसी कारण उसका पति और नाव अदृश्य हुए हैं। वह घर लौटकर श्रद्धा से प्रसाद ग्रहण करे, तब उसे उसका पति फिर दिखाई देगा।"

आकाशवाणी सुनकर कलावती तुरन्त घर लौटी। उसने पूजा-स्थान को प्रणाम किया, भगवान से क्षमा माँगी और श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। इसके बाद वह फिर नदी तट पर पहुँची। वहाँ उसने अपने पति को नाव सहित सुरक्षित देखा। वह अत्यन्त प्रसन्न हुई और भगवान श्री सत्यनारायण की जय बोली।

साधु वैश्य ने इस घटना से सत्य, संकल्प और प्रसाद का महत्त्व समझ लिया। वह अपने परिवार, दामाद और बन्धु-बान्धवों के साथ घर लौटा। उसने विधि-विधान से श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत किया, कथा सुनी, दान दिया और प्रसाद सबमें बाँटा। इसके बाद वह प्रत्येक पूर्णिमा और संक्रान्ति पर अपनी सामर्थ्य के अनुसार भगवान का पूजन करने लगा।

भगवान की कृपा से उसने परिवार सहित सुखपूर्वक जीवन बिताया। उसने व्यापार में सत्य और धर्म का पालन किया। अपने जीवन के अन्त में वह भगवान के परम धाम को प्राप्त हुआ।

सूतजी बोले, "हे मुनियों! इस अध्याय से यह शिक्षा मिलती है कि भगवान के सामने किया गया संकल्प नहीं भूलना चाहिए, असत्य और अभिमान से बचना चाहिए तथा प्रसाद को भगवान की कृपा मानकर आदर से ग्रहण करना चाहिए।"

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण-व्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥

बोलिए श्री सत्यनारायण भगवान की जय।

CHAPTER FIVE

पञ्चम अध्याय

राजा तुङ्गध्वज की कथा और व्रत का फल

सूतजी बोले, “हे श्रेष्ठ मुनियों! अब मैं एक और कथा सुनाता हूँ। इसके बाद इस पवित्र व्रत का फल और पूर्व भक्तों की आगे की गति बताऊँगा। आप श्रद्धा से सुनें।”

प्राचीन काल में तुङ्गध्वज नाम का एक प्रतापी राजा था। वह अपनी प्रजा का पालन करता था और उसके राज्य में धन-धान्य की कमी नहीं थी। परन्तु उसे अपने पद और वैभव का अभिमान हो गया था। अभिमान के कारण कभी-कभी वह साधारण भक्तों और धार्मिक कर्मों को उचित सम्मान नहीं देता था।

एक दिन राजा तुङ्गध्वज शिकार के लिए वन में गया। उसने वन्य पशुओं का पीछा करते हुए बहुत दूर तक यात्रा की। थककर वह एक बड़े वृक्ष के नीचे रुका। वहीं पास में कुछ गोप अपने परिवार और बन्धु-बान्धवों के साथ श्रद्धापूर्वक श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत और पूजन कर रहे थे। वे कथा सुन रहे थे, दीप जला रहे थे और नैवेद्य अर्पित कर रहे थे।

राजा ने पूजा देखी, पर अभिमानवश वह वहाँ नहीं गया। उसने न भगवान को प्रणाम किया और न कथा के विषय में पूछा। पूजा समाप्त होने पर गोपों ने आदर से प्रसाद लेकर राजा के पास पहुँचकर कहा, “महाराज! कृपया श्री सत्यनारायण भगवान का प्रसाद ग्रहण करें।”

राजा ने प्रसाद का सम्मान नहीं किया। उसने उसे वहीं रख दिया और बिना ग्रहण किए अपने नगर लौट गया। भगवान के पूजन और प्रसाद की उपेक्षा के कारण उस पर विपत्ति आई। कुछ ही समय में उसका धन, राज्य और परिवार संकट में पड़ गए। घर पहुँचकर उसने अपनी समृद्धि नष्ट और व्यवस्था बिगड़ी हुई देखी।

राजा ने गम्भीरता से विचार किया, “आज वन में मैंने श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा का अनादर किया और प्रसाद ग्रहण नहीं किया। यह संकट उसी अपराध का फल है।” उसे अपनी भूल पर पश्चात्ताप हुआ। वह बिना विलम्ब किए फिर उसी स्थान पर पहुँचा, जहाँ गोप पूजा कर रहे थे।

Satvikly

राजा ने उनके सामने विनम्र होकर भगवान को प्रणाम किया। उसने गोपों के साथ विधिपूर्वक श्री सत्यनारायण भगवान का पूजन किया, कथा सुनी और श्रद्धा से प्रसाद ग्रहण किया। उसने अपने अभिमान और अपराध के लिए क्षमा माँगी तथा दान दिया।

भगवान श्री सत्यनारायण उसकी सच्ची पश्चात्तापपूर्ण प्रार्थना से प्रसन्न हुए। उनकी कृपा से राजा का धन, राज्य, परिवार और सम्मान फिर प्राप्त हो गए। तुङ्गध्वज ने इसके बाद सत्य और धर्म के अनुसार शासन किया। वह समय-समय पर श्री सत्यनारायण भगवान का व्रत करता और प्रसाद को आदरपूर्वक ग्रहण करता रहा। जीवन के अन्त में उसे उत्तम लोक की प्राप्ति हुई।

सूतजी बोले, “जो मनुष्य श्रद्धा, सत्य और नियम से इस परम दुर्लभ व्रत को करता तथा कथा सुनता है, भगवान श्री सत्यनारायण की कृपा से उसकी उचित कामनाएँ पूर्ण होती हैं। निर्धन को जीविका और धन का सहारा मिलता है। बन्धन में पड़ा मनुष्य मुक्ति का मार्ग पाता है। भयभीत को साहस मिलता है। संतान की कामना रखने वाले को भगवान की इच्छा से संतान-सुख मिलता है। परिवार में शान्ति और धर्म बढ़ता है। मनुष्य इस लोक में पुण्यफल भोगकर अन्त में उत्तम गति प्राप्त करता है।”

“व्रत करते समय सत्य बोलना, संकल्प पूरा करना, दान और सेवा करना, कथा ध्यान से सुनना तथा प्रसाद का सम्मान करना आवश्यक है। केवल बाहरी आयोजन पर्याप्त नहीं है। मन में छल, अहंकार और असत्य रखकर किया गया कर्म पूर्ण फल नहीं देता। भगवान भक्त की सामग्री से अधिक उसके निष्कपट भाव को स्वीकार करते हैं।”

इसके बाद सूतजी ने उन भक्तों की आगे की गति का वर्णन किया, जिन्होंने पूर्व जन्मों में यह व्रत किया था। उन्होंने कहा, “काशी का वह वृद्ध निर्धन ब्राह्मण अगले जन्म में भगवान श्रीकृष्ण का परम मित्र सुदामा हुआ और अन्त में मोक्ष को प्राप्त हुआ। वह लकड़हारा अगले जन्म में निषादराज गुह बना, जिसने भगवान श्रीराम की भक्तिपूर्वक सेवा की और सद्गति पाई।”

“राजा उल्कामुख अगले जन्म में अयोध्या के महाराज दशरथ हुए। भगवान के प्रति श्रद्धा के प्रभाव से स्वयं श्रीराम उनके पुत्र रूप में प्रकट हुए और उन्हें परम गति मिली। साधु वैश्य अगले जन्म में धर्मात्मा राजा मोरध्वज हुआ। उसने भगवान की परीक्षा में अपने पुत्र तक को अर्पित करने का दृढ़ भाव दिखाया और भगवान की कृपा प्राप्त की। राजा तुङ्गध्वज अगले जन्म में स्वायम्भुव मनु हुआ और दीर्घकाल तक धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करके अन्त में भगवान के धाम को प्राप्त हुआ।”

सूतजी बोले, “हे ऋषियों! इस प्रकार मैंने श्री सत्यनारायण भगवान के व्रत की पाँच अध्यायों वाली पवित्र कथा कही। जो व्यक्ति श्रद्धा से इसका पाठ करता है, सुनता है या दूसरों को सुनाता है, वह सत्य, धर्म और भक्ति की ओर बढ़ता है। कथा पूरी होने पर भगवान को प्रणाम करें, आरती करें, प्रसाद ग्रहण करें और सबमें बाँटें।”

समस्त ऋषियों ने श्रीहरि का स्मरण किया, सूतजी को प्रणाम किया और एक स्वर में भगवान श्री सत्यनारायण की जय बोली।

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे श्रीसत्यनारायण-व्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ॥

बोलिए श्री सत्यनारायण भगवान की जय।

satvikly

CLOSING PRAYER

समापन प्रार्थना

हे श्री सत्यनारायण भगवान! कथा-पाठ, उच्चारण, भाव या विधि में हमसे कोई भूल हुई हो तो कृपा करके क्षमा करें। हमारे मन में सत्य, श्रद्धा, सेवा और धर्म का भाव बनाए रखें। सबका कल्याण करें।

श्री सत्यनारायण भगवान की जय।
श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की जय।

SATYANARAYAN POOJA KIT

पूजा किट ऑर्डर करें

पैक की हुई पूजा सामग्री के लिए Satvikly Satyanarayan Pooja Kit देखें।
फूल, फल, दूध, दही और प्रसाद की सामग्री अलग से लें।

QR स्कैन करें · SCAN TO ORDER

satvikly.com/product/satyanarayan-pooja-kit

WHATSAPP / PHONE

+91 931 178 0821